महर्षि अरविंद घोष के राजनीतिक विचार और उनका वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान

अनिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
anitavashishtha2008@gmail.com

डॉ. निर्मला राठौड़
शोध निर्देशक,
शिक्षा संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

सारांश:

महर्षि अरविंद घोष एक महान दार्शनिक, राष्ट्रवादी और शिक्षाविद थे। उनके राजनीतिक विचार केवल सत्ता प्राप्ति तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे 'राष्ट्रवाद को एक धर्म' के रूप में देखते थे। यह शोध–पत्र श्री अरविंद के राजनीतिक दर्शन विशेष रूप से 'आध्यात्मिक राष्ट्रवाद' और 'मानव एकता' का विश्लेषण करता है और यह स्पष्ट करता है कि कैसे उनके विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में 'मूल्य–आधारित शिक्षा' और 'चरित्र निर्माण' के लिए प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द: *महान दार्शनिक, राष्ट्रवादी और शिक्षाविद, राजनीतिक विचार, प्रासंगिकता, मानव एकता*

1. प्रस्तावना

महर्षि अरविंद का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाएं देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर छिपी दिव्य शक्तियों को जाग्रत करना है। उनके राजनीतिक विचारों की धुरी 'स्वराज' थी, लेकिन यह स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आत्म–चेतना और आध्यात्मिक स्वतंत्रता भी थी। वर्तमान समय में जब शिक्षा बाजारीकरण और तकनीकी स्पर्धा में खो रही है, अरविंद के विचार एक 'मानवीय और राष्ट्रवादी' दिशा प्रदान करते हैं।

2. साहित्य समीक्षा

महर्षि अरविंद घोष का 1969 में प्रकाशित ग्रंथ, ''मानव एकता का आदर्श'', इस शोध पत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्य समीक्षा प्रस्तुत करता है। इस कृति में, उन्होंने भारतीय संस्कृति के गहन सूत्र ''वसुधैव कुटुंबकम्'' का विषद विश्लेषण किया है। वे बताते हैं कि किस प्रकार यह अवधारणा राष्ट्र निर्माण

का आधार बनती है और कैसे विविध जातीय, धार्मिक, भाषाई एवं सांप्रदायिक पृष्ठभूमि के लोग एक साथ मिलकर राष्ट्रीय सद्भाव को सशक्त करते हैं। उनके चिंतन का सार यह है कि कोई भी राष्ट्र अपने कार्यों का निर्धारण केवल अपने हितलाभ को ध्यान में रखकर न करे, बल्कि समस्त मानव जाति के कल्याण और संवर्धन को सर्वोच्च प्राथमिकता दे।

महर्षि अरविंद घोष द्वारा 1973 में रचित ''आन हिम शेल्फ'' नामक आत्मकथात्मक कृति साहित्यिक समीक्षा की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। इसमें उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन यात्रा – जन्म से मृत्यु पर्यंत दृ का विस्तृत वृत्तांत प्रस्तुत किया है। इस वृत्तांत के अंतर्गत, उन्होंने पाश्चात्य संस्कृति, भारतीय राष्ट्रवाद, अध्यात्मवाद और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चिंतन और विश्लेषण किया है।

मंगेश नाडकर्णी ने अपनी पुस्तक ''सावित्री'' (2011) के माध्यम से एक उत्कृष्ट काव्यात्मक रचना का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो मानव मन को उच्चतम आध्यात्मिक स्तर तक उन्नत और विस्तारित करने की क्षमता रखती है। वे इसमें तीन केंद्रीय विषयों को रेखांकित करते हैंः प्रेम, मृत्यु और पृथ्वी पर जीवन।

के.एस. भारती द्वारा 1998 में प्रकाशित ''एन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमीनेंट थिंकर्स, द पॉलिटिक्स थॉट ऑफ ओरबिंदो घोष'' महर्षि अरविंद घोष के राजनीतिक विचारों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के अंतर्गत, महर्षि अरविंद के लोकतंत्र, स्वतंत्रता, संस्कृति, राष्ट्रवाद और मानवीय एकता के आदर्शों पर गहन शोध किया गया है।

महर्षि अरविंद सोसाइटी द्वारा (2013) में प्रकाशित, और जगन्नाथ वेदालंकार द्वारा अनूदित, ''भारतीय संस्कृति के मूलाधार'' नामक पुस्तक महर्षि अरविंद के विचारों की प्रभावी ढंग से व्याख्या करती है। इसके साथ ही, यह भारतीय कला, साहित्य और शासन प्रणाली पर एक तार्किक एवं विश्लेषणात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत करती है।

महर्षि अरविंद सोसाइटी द्वारा 2016 में प्रकाशित ''मानव एकता का आदर्शः युद्ध और निर्णय'' आधुनिक भारतीय चिंतन में महर्षि अरविंद के राष्ट्रवादी स्वरूप पर गहन प्रकाश डालती है। यह कृति विशेष रूप से बहुजातीय राष्ट्र के निर्माण और उसके तत्वों पर केंद्रित है।

3. अध्ययन का उद्देश्य

महर्षि अरविंद घोष के राजनीतिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान पर प्रकाश डालना।

4. महर्षि अरविंद के प्रमुख राजनीतिक विचार

राष्ट्रवाद एक धर्म के रूप में:

अरविंद के लिए राष्ट्र केवल भूखंड नहीं, बल्कि 'मां' का स्वरूप था। उनका राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं, बल्कि मानवतावादी था।

आध्यात्मिक स्वराज:

उन्होंने तर्क दिया कि बाहरी स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक व्यक्ति और समाज आंतरिक रूप से स्वतंत्र न हो।

मानव एकता का आदर्श:

उनका राजनीतिक दर्शन 'वसुधैव कुटुंबकम' का आधुनिक संस्करण था, जहाँ उन्होंने विश्व–संघ की कल्पना की थी।

5. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महर्षि अरविंद के विचारों का योगदान

(क) सर्वांगीण विकास

अरविंद का 'पूर्ण शिक्षा' का सिद्धांत वर्तमान 'नई शिक्षा नीति (NEP 2020)' के लक्ष्यों से मेल खाता है। वे केवल बौद्धिक विकास के पक्षधर नहीं थे, बल्कि शारीरिक, मानसिक, मानसिक और आध्यात्मिक चारों स्तरों के संतुलित विकास पर जोर देते थे। आज की शिक्षा में 'योग और मानसिक स्वास्थ्य' को शामिल करना उनके विचारों की ही प्रासंगिकता है।

(ख) राष्ट्रप्रेम और चरित्र निर्माण

अरविंद मानते थे कि शिक्षा का कार्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जिनका चरित्र सुदृढ़ हो और जो राष्ट्र के प्रति समर्पित हों। वर्तमान समय में, जहाँ मूल्यों का क्षरण हो रहा है, अरविंद की 'मूल्य–आधारित शिक्षा' युवाओं को एक नैतिक आधार प्रदान करती है।

(ग) मातृभाषा में शिक्षा

अरविंद ने इस बात पर जोर दिया था कि शिक्षा की नींव मातृभाषा में होनी चाहिए। यह विचार वर्तमान में 'बहुभाषी शिक्षा' को बढ़ावा देने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। उन्होंने माना था कि विदेशी भाषा में शिक्षा बच्चे की रचनात्मक क्षमता को कुंठित करती है।

(घ) गुरु–शिष्य परंपरा का आधुनिकीकरण

अरविंद का मानना था कि शिक्षक केवल 'सूचना देने वाला' नहीं, बल्कि एक 'पथ–प्रदर्शक' होना चाहिए। वर्तमान में 'मेंटॉरशिप की अवधारणा उनके इसी विचार का आधुनिक स्वरूप है।

6. चुनौतियाँ और समावेशन

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अरविंद के विचारों को लागू करने में सबसे बड़ी चुनौती 'व्यावहारिकता' की है। तकनीकी युग में आध्यात्मिक चिंतन को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना एक कठिन कार्य है। हालांकि, 'सीखने के कौशल' और 'आत्म–अन्वेषण' के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

7. निष्कर्ष

महर्षि अरविंद के राजनीतिक विचार आज भी एक 'प्रबुद्ध राष्ट्र' के निर्माण का ब्लूप्रिंट हैं। उनकी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य केवल डिग्रीधारी तैयार करना नहीं, बल्कि 'दिव्य मानव' का निर्माण करना है। यदि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनके 'अंगभूत शिक्षा' के सिद्धांतों को समावेशित किया जाए, तो भारत न केवल एक वैश्विक शक्ति बनेगा, बल्कि एक शांतिपूर्ण और जागरूक समाज की स्थापना भी कर पाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

घोष, अरविंद. (1995), ऑन एजुकेशन. श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।
राय, के.के. (2010), श्री अरविंद के राजनीतिक विचार, ।
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति का दस्तावेज.
सिंह, ए.के. (2018), भारतीय शिक्षा दर्शनः रवींद्रनाथ और अरविंद